

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 22, अनुग्रह द्वारा उद्धार, इफिसियों 2:1-10

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह सत्र 22 है, अनुग्रह द्वारा मुक्ति, इफिसियों 2:1-10।

जेल पत्रों पर हमारी बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

इस अध्ययन में आपका हमारे साथ शामिल होना अद्भुत और सौभाग्य की बात है। पिछले कुछ अध्ययनों में, हम इफिसियों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, और आपने शायद देखा होगा कि हमने इस पत्र और पहले अध्याय के परिचय को देखने में काफी समय बिताया है। मैं बस वहीं से शुरू करना चाहता हूँ जहाँ हमने पिछले व्याख्यान में छोड़ा था, अर्थात् पिछले अध्याय के अंतिम भाग में बातचीत, जिसमें पॉल के बारे में बात की गई थी कि वह प्रार्थना कर रहा था कि चर्च ईश्वर की शक्ति की महानता को समझ सके, वह शक्ति जो मसीह में प्रकट हुई।

जब मसीह की मृत्यु हुई, तो यह शक्ति उसके शरीर में समा गई, और बेजान शरीर में जान आ गई। मैंने आपका ध्यान अंत की ओर आकर्षित किया कि वह शक्ति जो मसीह में काम कर रही थी, जिसने उसे फिर से जीवित किया, जिसके साथ परमेश्वर ने उसे उठाया और सभी प्रमुख शक्तियों को अपने अधीन कर लिया, वह शक्ति भी है जो चर्च की ओर से काम कर रही है। अब हम अध्याय 2 शुरू करते हैं, जिसे मैंने आपके दिमाग को यह बताने की कोशिश करते हुए पढ़ा कि हम क्या करने जा रहे हैं।

मैंने पद 1 से 10 तक पढ़े, जो इस समय हमारे व्याख्यान का मुख्य विषय है। मैं आपको यह याद दिलाने के लिए पढ़ता हूँ कि पौलुस किस तरह से माहौल बनाता है, कि अगर वास्तव में परमेश्वर की स्तुति इस तरह से की जाती है, अगर पौलुस की प्रार्थना पूरी होती है, तो यह बहुत महत्वपूर्ण है कि प्रभु यीशु मसीह के अनुयायी यह समझें कि परमेश्वर ने उन्हें कहाँ से लिया है और परमेश्वर उन्हें कहाँ ले जा रहा है। वे यह समझें कि वे वास्तव में कौन हैं और परमेश्वर ने उन्हें एक बहुत ही दयनीय, दुखद स्थिति से निकालकर उस स्थान पर पहुँचाया है जहाँ उसने उन्हें मसीह के साथ रखा है।

वह आधार जिसके लिए वह श्वासहीन आह्वान दिया जा सकता है। लेकिन इससे पहले कि हम उस पर जाएं, आप जानते हैं कि मैं चाहता हूँ कि आप कुछ चीजों के बारे में सोचना शुरू करें। तो मैं कुछ प्रश्न पूछता हूँ, विशेष रूप से तीन प्रश्न, जिनके बारे में आपको सोचना शुरू करना चाहिए क्योंकि इस विशेष व्याख्यान का विषय अनुग्रह द्वारा उद्धार है।

अनुग्रह से उद्धार। तो, आइए इस पर कुछ सवालों पर गौर करें। अगर उद्धार अनुग्रह से है, तो हम किससे बचाए गए हैं? किससे उद्धार? हमें उद्धार की ज़रूरत क्यों है? इफिसियों, उद्धार के

विषय को संबोधित करने वाली एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक, हमें इन गंभीर सवालों के बारे में सोचने के लिए छोड़ देती है।

आजकल, जब हम उद्धार के बारे में बात करते हैं, तो वास्तव में, एक बात जो दिमाग में आती है वह यह है कि मैं हमेशा एक अच्छा लड़का था। मैंने कभी कोई बुरा काम नहीं किया, और फिर किसी तरह, भगवान ने मुझे सिखाया कि मुझे उद्धार की आवश्यकता है, इसलिए उन्होंने अपने बेटे को मेरे लिए मरने के लिए भेजा। इसलिए, जब हम मसीह यीशु में बचाए जाने के बारे में बात करते हैं, तो ऐसा लगता है कि मसीह ने बिना किसी कारण के अपनी जान दे दी। वास्तव में, ऐसा लगता है कि हम भगवान पर एहसान कर रहे हैं कि हम उनके निमंत्रण पर ध्यान दें कि हम एक ऐसी जगह बनें जहाँ हम बस आकर नाचें या ताली बजाएँ या अपने हाथ ऊपर उठाएँ या संगति करें या शायद चर्च सेवा के बाद, शायद आपका पसंदीदा हिस्सा उस संगति हॉल में जाना, कॉफी पीना, कुछ बढ़िया अंग्रेजी मफिन खाना और फिर उसके बाद सड़क पर निकल जाना हो।

हम किससे बचाए गए हैं? आइए इस पाठ को पढ़ते समय इस बारे में सोचें। आपके लिए सबसे पहला सवाल यह है कि हम किस हद तक उस संस्कृति के अधीन हैं जिसमें हम रहते हैं? जब हम इस बारे में सोचते हैं कि हम किससे बचाए गए हैं, तो क्या हम यह सवाल भी पूछ सकते हैं कि क्या हम जिस संस्कृति में रहते हैं, जिस समाज में रहते हैं, वह हमें आकार दे रहा है, हमें प्रभावित कर रहा है, हमारे जीवन के मार्ग का पता लगा रहा है? यदि ऐसा है, तो क्या यह सिर्फ, सिर्फ, सिर्फ महत्वपूर्ण है कि उद्धार उस क्षेत्र में चढ़े जहाँ परमेश्वर हमें इस दुनिया के हुकमों से बचाता है? या मेरा अगला सवाल जिसके बारे में आपको सोचना चाहिए।

क्या आप एक पल के लिए भी सोचते हैं कि आपके सुख या इच्छाएँ आपके जीवन जीने के तरीके को नियंत्रित करने की क्षमता रखती हैं? आप जानते हैं, ये शब्द ईसा मसीह ने नहीं कहे थे, बल्कि एक यूनानी दार्शनिक सुकरात ने कहा था, हम कैसे कह सकते हैं कि आप स्वतंत्र हैं जब आपके सुख आप पर हावी होते हैं? वास्तव में, सुकरात का प्रश्न, उसमें निहित है, यह है। यदि आपके सुख आप पर हावी होते हैं, यदि आपकी शराब की इच्छा, सेक्स की इच्छा, किसी भी चीज़ की इच्छा, भोजन की इच्छा, दुनिया की किसी भी चीज़ की इच्छा, यदि वह आप पर हावी होती है, तो क्या आप उन चीज़ों के गुलाम नहीं हैं? लेकिन आपके सुख, या पॉलिन की भाषा, किस हद तक आप पर हावी होती है, और क्या हमें उससे मुक्ति की आवश्यकता है? या, इसे दूसरे तरीके से कहें, क्या मसीह में मुक्ति उस तक पहुँचती है? मैं आपको सोचने के लिए उकसा रहा हूँ क्योंकि आपने शायद सोचा होगा कि भगवान ने आपको बचाया है, लेकिन उसने आपको इनमें से किसी से भी नहीं बचाया। तो मैं आपसे एक और गंभीर सवाल पूछता हूँ।

हमारे पश्चिमी श्रोताओं के लिए, यह एक दोस्ताना सवाल नहीं है। गैर-पश्चिमी श्रोताओं के लिए जो इस व्याख्यान श्रृंखला का अनुसरण कर रहे हैं, आपको यह थोड़ा आसान लग सकता है। तो, क्या आप मानते हैं कि दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियाँ मनुष्यों से वह सब छीन सकती हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है? और क्या आप वास्तव में मानते हैं कि उद्धार में परमेश्वर द्वारा आपको दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियों के नियंत्रण और शक्तिशाली प्रभाव से बचाना शामिल है? अब, इससे पहले कि हम इफिसियों की ओर मुड़ें और अध्याय 2, श्लोक 1 से 10 को बारीकी से देखना शुरू करें,

क्या मैं आपके लिए और भी सवाल पूछ सकता हूँ ताकि आप और भी ज़्यादा सोचना शुरू कर सकें।

क्या होगा यदि आप विश्वास नहीं करते कि बुरी आध्यात्मिक शक्तियाँ मौजूद हैं? क्या इसका मतलब है कि आपका उद्धार सीमित है, या इसका मतलब यह है कि आप यह भी नहीं समझते कि परमेश्वर ने आपके लिए क्या किया है? आप देखिए, यहाँ पौलुस, जिसने हमें यह महत्वपूर्ण, समृद्ध धर्मशास्त्रीय शब्द, अनुग्रह दिया है, को इस संदर्भ में समझने की आवश्यकता है कि वह परमेश्वर की शक्ति के बारे में कैसे सोचता और अनुभव करता है। आइए इफिसियों अध्याय 2, पद 1 से 10 को देखें, जैसा कि आप मेरे द्वारा पूछे गए इन प्रश्नों पर विचार करते हैं। पद 1 से, पौलुस लिखता है, और तुम उन अपराधों और पापों में मरे हुए थे जिनमें तुम पहले चलते थे, इस संसार की रीति पर चलते थे, हवा की शक्ति के हाकिम के पीछे, अर्थात् उस आत्मा के पीछे जो अब भी अवज्ञा के पुत्रों में कार्य करती है, जिनके बीच हम सब पहले अपने शरीर की वासनाओं में जीते थे, शरीर और मन की लालसाओं को पूरा करते थे, और बाकी मनुष्यों की तरह स्वभाव से क्रोध की संतान थे।

परन्तु परमेश्वर ने जो दया में धनी है, उस महान प्रेम के कारण जो उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया। वाह! उसने हमें मसीह के साथ जिलाया। और यदि मैं पद 8 पर जाऊँ, तो अनुग्रह से तुम विश्वास के द्वारा बचाए गए हो, और यह तुम्हारा अपना काम नहीं है, यह परमेश्वर का उपहार है।

मैं आपको इस विशेष अंश के बारे में कुछ प्रमुख संरचनात्मक बातें बताता हूँ, और फिर हम उन्हें एक-एक करके खोलेंगे, और हम हर पंक्ति को ध्यान से पढ़ेंगे या देखेंगे। इस विशेष अंश की शाब्दिक संरचना में, आप शायद यह ध्यान रखना चाहेंगे कि यह केवल दो वाक्यों से बना है। अध्याय 2, श्लोक 1 से 10, ग्रीक में केवल दो वाक्यों से बना है।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आप देखेंगे कि जब पॉल अपने पाठकों के ईसाई-पूर्व अतीत के बारे में लिखना शुरू करता है, तो वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि वह तब तक एक वाक्य पूरा न करे जब तक कि वह उन्हें यह न बता दे कि सकारात्मक दिशा में क्या हुआ है। इसलिए, पद 1 से 7 सीधे जारी रहता है, और पॉल उसके अंत में एक कोष्ठक कथन छोड़ देगा जो यह दर्शाता और दिखाता है कि, वास्तव में, ईश्वर की कृपा उन लोगों के लिए आई है जो इस स्थिति में थे। यदि आप इसे अंग्रेजी में कई वाक्यों के साथ पढ़ते हैं, तो यह वास्तव में वह अर्थ नहीं बताता है जो पॉल यहाँ व्यक्त कर रहा है।

दूसरे शब्दों में, केवल 1 से 7 तक की आयतों को देखते हुए, वह शायद खुद से कह रहा होगा, मैं रुकूंगा नहीं, और मैं यहाँ कोई वाक्य समाप्त नहीं करूँगा, कहीं ऐसा न हो कि वे सोचें कि मैंने अपनी बात समाप्त कर दी है। मुझे इस नकारात्मक नोट पर जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरा मुख्य ध्यान उन्हें ईश्वर के प्रेम और दया की महानता के करीब लाना है और उन लोगों तक पहुँचना है, जो ईश्वर का अनुभव करने से पहले, ईश्वर के क्रोध के अधीन थे और उन्हें बुलाया जा रहा था।

फिर श्लोक 8 से 10 उद्धार को रेखांकित करेंगे और बताएंगे कि हमें उद्धार कहां से मिलता है। बहुत सारे ईसाई सिद्धांत, विशेष रूप से सिद्धांत का वह हिस्सा जिसे हम उद्धारशास्त्र कहते हैं, इस अंश में निहित है। यह एक समृद्ध धार्मिक पाठ है, और मुझे उम्मीद है कि हम इसके विवरण और इसके निहितार्थों के बारे में गंभीरता से सोचेंगे।

अध्याय 2, आयत 1 से 3, विशेष रूप से मसीह-पूर्व अतीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं। पौलुस आगे चलकर यह समझने में सक्षम होने की भाषा का उपयोग करेगा कि हम कहाँ थे, और वह तब और अब के बीच के अंतर का उपयोग करता है। हम तब थे, लेकिन अब।

वास्तव में, इफिसियों 2 के पूरे अध्याय में, आप उस आवर्ती पैटर्न को देखेंगे। हम तब ऐसे थे, लेकिन अब हम ऐसे हैं। 1 से 3 में, पौलुस उन्हें याद दिलाता है कि मसीह-पूर्व अतीत अच्छी खबर नहीं है।

हम बाद में इस पर और अधिक विचार करेंगे। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, श्लोक 4 से 7 तक, श्लोक 1 से शुरू होने वाला वही वाक्य याद रखें। 4 से 7 तक, वह वास्तव में अतीत में जो कुछ भी कहा था, उससे एक तीव्र विरोधाभास करता है, और यह उस समय ईश्वरीय हस्तक्षेप की महानता को दर्शाता है जब हमारा जीवन गलत दिशा में जा रहा था। श्लोक 8 से 10 में, दूसरा वाक्य परमेश्वर के उद्धार के कार्य का सारांश प्रस्तुत करता है।

कैसे परमेश्वर मानवजाति तक पहुँचने के लिए आया है और हमें वह स्थिति दी है जिसमें हम हैं। आप इन दो वाक्यों में ध्यान देना चाहेंगे कि कैसे ग्रीक शब्द जिसका हम अनुवाद करते हैं, चलना या जीना, वाक्य की शुरुआत करता है और वाक्य के अंतिम पद में समाप्त होता है। दूसरे शब्दों में, यह जीवन के उस तरीके को दर्शाता है जो मसीह के बिना जिया गया था और जीवन के उस तरीके को प्रतिबिंबित या याद करके समाप्त होता है जिसे जीने के लिए ईसाइयों को बनाया गया है।

यहाँ से, हम अब अध्याय 2, पद 1 से 3 को थोड़ा और करीब से देख सकते हैं। और मुझे उम्मीद है कि मैं इस बारे में बहुत भावुक नहीं हो जाऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि आप सोचें कि मैं बहुत जल्दी आगे बढ़ गया हूँ, क्योंकि जब हम इस पर से गुजरेंगे तो आप समझ जाएँगे कि यह हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है कि हम मसीही कौन हैं। 2 पद 1, और तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, जिनमें तुम एक बार इस संसार के मार्ग का अनुसरण करते हुए, हवा की शक्ति के राजकुमार का अनुसरण करते हुए, उस आत्मा का अनुसरण करते हुए चले थे, जो अब अवज्ञा के पुत्रों में काम कर रही है, जिनके बीच हम सभी एक बार अपने शरीर की वासनाओं में जीते थे, शरीर और मन की इच्छाओं को पूरा करते थे, और बाकी मानव जाति की तरह स्वभाव से क्रोध के बच्चे थे।

तो, पहले की जीवन शैली की प्रकृति क्या थी? खैर, यह मृत्यु की स्थिति थी। यहाँ इस्तेमाल किया गया रूपक जीवन की बेजान या सच्ची भावना की स्थिति है। हम मर चुके थे, और हम पाप के दायरे में मर चुके थे, और हम फँस चुके थे।

ये दो शब्द वास्तव में उस स्थिति की विशालता पर जोर देने के लिए अनावश्यक रूप से इस्तेमाल किए गए हैं जिसमें हम थे। हम मर चुके थे, हम फँसे हुए थे, हम वास्तव में पाप और अपराधों की एक दयनीय स्थिति में थे। और वह बताएगा कि मृत्यु का वह जीवन कैसे जिया जा रहा था।

पॉल आगे कहते हैं कि यह एक बंधन का जीवन था। वह तीन विशिष्ट क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है जिसमें मसीह के बिना जीवन जिया जा रहा था। यह वास्तव में वह जीवन था जो इस दुनिया के युग के अनुसार जिया जाता है।

क्या आपको याद है कि मैंने आपसे शुरुआत में सवाल पूछा था? आपको क्या लगता है कि हमारा वातावरण किस हद तक हमारे जीवन के तरीके को निर्धारित करने में सक्षम है? पॉल कहते हैं कि मसीह के बिना जीवन एक ऐसा जीवन है जो इस दुनिया के हुक्म के अनुसार जिया जाता है। दुनिया के सुख, दुनिया की इच्छाएँ, दुनिया को जो अच्छा लगता है, वही उन लोगों को अच्छा लगता है। इस हद तक कि जब वे खुद को नष्ट कर रहे होते हैं, तो उन्हें लगता है कि वे मज़े कर रहे हैं।

जब लोग अस्पताल के बिस्तर पर जीवन भर के लिए, शारीरिक मृत्यु के लिए, किसी तरह की मानसिक बीमारी के लिए, यानी दवाइयाँ खरीदने और इस तरह की अन्य चीज़ों के लिए खुद को सजा देने के लिए बहुत सारा पैसा खर्च कर रहे हैं, तो वे सोच सकते हैं कि क्योंकि हर कोई यही कर रहा है, इसलिए यह अच्छा है। पॉल ने कहा कि वे इस दुनिया के अनुसार, इस दुनिया की उम्र के अनुसार जीते हैं। इसलिए, उनका जीवन दुनिया द्वारा तय किया गया था।

शायद मुझे यह पूछने के लिए रुकना चाहिए, एक ईसाई के रूप में, यदि आप इन अध्ययनों का अनुसरण कर रहे हैं, तो क्या आप खुद को ऐसी जगह पाते हैं जहाँ आपका जीवन अभी भी समाज द्वारा कहे जाने वाले अच्छे कामों से प्रभावित और निर्देशित हो रहा है, न कि परमेश्वर द्वारा इस दुनिया में जीने के लिए सही तरीके से स्थापित किए गए जीवन से? इसके बारे में सोचें। पॉल ने कहा कि यह एक ऐसा जीवन है जो शरीर के अनुसार भी जिया जाता है। उसने कहा कि वह खुद भी, एक यहूदी के रूप में, वे सभी इसके अधीन थे, और वे अपनी भावनाओं के अधीन थे।

उनके जुनून प्रभावित थे और तय करते थे कि वे कैसे अपना जीवन जीते हैं। क्या आपको वह प्रश्न याद है जो मैंने पहले पूछा था? क्या आपको सुकरात का वह उद्धरण याद है जो मैंने आपको दिया था? आप कैसे कह सकते हैं कि आप स्वतंत्र हैं जब आपके जुनून और इच्छाएँ आप पर हावी हैं? ओह, यह एक अच्छा सवाल है। लेकिन आप जल्द ही यह जान लेंगे कि जब आपके जुनून आप पर हावी होते हैं और दुनिया आप पर हावी होती है और आपका शरीर और आपकी शारीरिक इच्छाएँ आपके जीने के तरीके को तय करती हैं, तब भी आशा होती है; अनुग्रह होता है, दया होती है।

लेकिन यह सब नहीं है। पौलुस आगे कहता है, वास्तव में, मसीह-पूर्व अतीत एक ऐसा जीवन है जो शासकों और शक्तियों के निर्देशों के अनुसार जिया जाता था। दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं जो उन लोगों के जीवन को नियंत्रित करती हैं जो मसीह को नहीं जानते।

इफिसुस में रहने वाले ईसाइयों के बारे में सोचिए। हमने इस विशेष पत्र के परिचय पर चर्चा करने में लगभग दो घंटे बिताए, जिससे आपको पृष्ठभूमि के कुछ मुद्दे पता चले। वे एक बंदरगाह शहर में रहते हैं और वे सभी उच्च जीवन जीते हैं जिसके बारे में आप सोच सकते हैं।

वे एक ऐसे शहर में रहते हैं जो धार्मिक गतिविधियों से भरा हुआ है। वे एक ऐसे शहर में रहते हैं जहाँ जादू और सभी प्रकार की आध्यात्मिक शक्तियाँ और उनके प्रभाव हैं। पॉल कहते हैं कि मसीह के बिना जीवन भी एक ऐसा जीवन था जिसे जिया गया था।

वास्तव में, उसने जो भाषा इस्तेमाल की है, वह हवा की शक्ति के शासक के अनुसार है। और परिणामस्वरूप, जब हम मसीह को नहीं जानते थे, तो हम क्रोध की वस्तु बन गए हैं। तुम एक बार इस दुनिया के रास्ते पर चले, हवा की शक्ति के पुजारी का अनुसरण करते हुए, वह आत्मा जो अब अवज्ञा के पुत्रों में काम कर रही है, जिनके बीच हम सभी एक बार अपने शरीर की वासनाओं में जीते थे, शरीर और मन की इच्छाओं को पूरा करते थे, और बाकी मानव जाति की तरह स्वभाव से क्रोध के बच्चे थे।

खैर, आइए इस आयत में इनमें से कुछ बातों को थोड़ा और करीब से समझें। आइए अपराधों और पापों में मृत शब्द पर नज़र डालें। और मैं एक टिप्पणीकार, लिंकन द्वारा कही गई बातों को उद्धृत करना चाहता हूँ, जो पाप और अपराधों में मृत्यु के रूपक के इस सभी अर्थ के लिए पुराने नियम की पृष्ठभूमि को समझाने की कोशिश करते हैं और कैसे, पुराने नियम के बाहर, यह भी प्रचलित था।

लिंकन इसे इस तरह से कहते हैं। यहूदी धर्म के बाहर, स्टोइक लेखक मृत शब्द का प्रयोग आलंकारिक अर्थ में करते हैं क्योंकि उनका मानना था कि जो व्यक्ति के सर्वोच्च, मन या आत्मा से संबंधित नहीं है, उसे जीवित के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता। वह जो किसी व्यक्ति के पशु जगत के साथ समान था और जो उसे ईश्वर से अलग करता था, उसे मृत माना जाता था।

मैं यहाँ आपको कुछ कठोर बातें नहीं बता पाऊँगा जो स्टोइक्स ने तब कही हैं जब मनुष्य शालीनता से दूर चले जाते हैं और ऐसा जीवन जीने लगते हैं जिसे वे कभी-कभी पशु-जैसा व्यवहार कहते हैं। कल एपिक्टेटस को पढ़ते हुए, इनमें से कुछ दार्शनिकों को पढ़ना और यह देखना बहुत दिलचस्प था कि वे कितने धार्मिक हैं। और फिर भी वे अपने बुतपरस्त ढांचे में भी यह कहने में जल्दी करते हैं कि एक ऐसा जीवन जो एक समझदार इंसान की अपेक्षा के अनुरूप नहीं जिया जाता है, वह मृत्यु का जीवन है।

पॉल कहते हैं कि मसीह द्वारा बचाए जाने से पहले हम यहीं थे, और आज हम जिस समय बात कर रहे हैं, उस समय सभी अविश्वासी यहीं हैं - इस संसार का युग। इस संसार का युग विद्वानों को चर्चा के कुछ बिंदु देता है क्योंकि जिस यूनानी शब्द का अनुवाद युग किया गया है, वह कभी-कभी हमें बहुत सारे अनुमान या विकल्प चुनने के लिए छोड़ देता है क्योंकि संदर्भ के आधार पर शब्द का अनुवाद अलग-अलग हो सकता है।

उम्र के लिए शब्द के लिए, मैं अपने पास मौजूद अंग्रेजी प्रतिलेखन का उपयोग करता हूँ, और क्योंकि मुझे पता चला कि यह अंग्रेजी शब्दकोश में भी है, मैंने सोचा कि मैं थोड़ा धोखा दूँगा और

इसमें कुछ ग्रीक शब्द जोड़ दूंगा। मेरे पास जो शब्द है, जो कि उम्र है, कभी-कभी एक अस्थायी अर्थ रखता है, समय की अवधि या समय के ढांचे के बारे में बात करता है। कभी-कभी, इसका एक विशेष ब्रह्मांडीय अर्थ होता है और यह आध्यात्मिक या कुछ ब्रह्मांडीय शक्तियों को संदर्भित करता है।

हालाँकि, जब हम इफिसियों अध्याय 2 पद 1 से 3 तक इफिसियों अध्याय 2 पद 7 को देखते हैं, तो हमें लौकिक उपयोग मिलता है। और इसलिए, हम इफिसियों और अन्यत्र पौलुस के लिए इस शब्द का उपयोग विशेष ब्रह्मांडीय बारीकियों को संदर्भित करने के लिए नहीं पाते हैं, भले ही शास्त्रीय यूनानी और अन्य यूनानी ग्रंथों में, इस शब्द का उपयोग किसी विशेष या ब्रह्मांडीय विश्वदृष्टि की अवधारणा को संदर्भित करने के लिए किया जाना असामान्य नहीं था, जो युग को ब्रह्मांडीय क्षेत्र के रूप में संदर्भित करता है। इसलिए, पौलुस यहाँ कह रहा है कि यहाँ जो युग है वह कोई अमूर्त आध्यात्मिक आध्यात्मिक क्षेत्र नहीं है, बल्कि यहाँ जिस युग की बात की जा रही है वह वह दुनिया है जिसमें हम रहते हैं। और इसलिए यह कहना कि जो लोग मसीह को नहीं जानते थे जब वे अविश्वासी थे, वास्तव में इस दुनिया के युग के अनुसार रहते थे, यह कहना है कि वे उस दुनिया के निर्देशों के अनुसार रहते थे जिसमें वे रहते हैं।

वे जिस दुनिया में रहते थे, उसके मानक के अनुसार जीते थे। उनके समय-सीमा ने उनके जीने के तरीके को आकार दिया। और मुझे पसंद आया कि मेरे कुछ सहकर्मियों ने इसे कैसे समझाया है।

क्लिंट अर्नोल्ड, जो मेरे गुरु थे, ने वास्तव में इसे इस तरह से कहा। इस दुनिया का युग अस्वस्थ और अधार्मिक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक वातावरण है जिसमें हम रहते हैं। यह साथियों के दबाव, वैचारिक प्रणालियों और संरचनाओं के रूप में संगठित बुराई का प्रतिनिधित्व करता है जो हमें ईश्वर और उसके उद्देश्यों से पूरी तरह अलग जीवन जीने की पटकथा प्रदान करते हैं।

मैंने पाया है कि चाहे मैं किसी भी देश में रहूँ, इस दुनिया के युग के अनुसार जीना सबसे अच्छा तब लगता है जब कोई राजनीतिक उद्यम होता है, चाहे वह कोई अभियान हो या कुछ और। अचानक, लोग मसीह यीशु के बजाय किसी राजनीतिक पार्टी के लिए ज़्यादा प्रचारक बन जाते हैं। इस दुनिया के युग के अनुसार जीना भी बहुत दिलचस्प हो जाता है, खासकर जब मैं अफ्रीका में होता हूँ, यह देखने के लिए कि राजनेता कैसे ईसाइयों के लिए नैतिक आदर्श को छेड़ते हैं और वे किस पर ज़ोर देना चुनते हैं, वे किस पर ज़ोर नहीं देना चुनते क्योंकि वे दोषी हैं, और कैसे अभी भी ईसाई यह कहने के लिए आगे बढ़ते हैं, ओह, हम आपके पक्ष में हैं, और उन एक या दो चीज़ों पर ज़ोर देते हैं जो ईसाइयों के पक्ष में हैं, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस को छोड़ दें जो ईश्वरीय पक्ष में हैं।

इस दुनिया की उम्र हमारे विचारों को, हमारे दिमाग को अपने कब्जे में लेने का अपना तरीका अपनाती है। पॉल ने कहा कि मसीह-पूर्व जीवन में, हमारे जीवन उसी में डूबे हुए थे, और हमारे पास नैतिक विवेक नहीं था कि हम इस बात को समझ सकें कि हम जिस दुनिया में रहते थे, उसमें क्या ईश्वरीय था और क्या अधर्मी। पॉल ने पहले एक से तीन में एक और शब्द का भी

इस्तेमाल किया है जिसे मुझे थोड़ा समझने की ज़रूरत है, और वह शब्द है, हवा की शक्ति का शासक।

आप जानते हैं मेरा क्या मतलब है? हम अफ्रीकियों के साथ काम कर रहे हैं। यह बहुत ही दिलचस्प है कि कैसे अफ्रीकी इसे देखते हैं, इसे पढ़ते हैं और कहते हैं, ओह हाँ, हाँ, हाँ, मुझे लगता है कि मैं बिल्कुल समझ गया हूँ कि क्या हो रहा है। और आप जानते हैं, अफ्रीकी ईसाइयों की यह विशेषता है कि जब हम इफिसियों को पढ़ना शुरू करते हैं, तो अचानक मेरे दोस्तों, इन पादरी और छात्रों को हर जगह शैतान दिखाई देते हैं।

वे हर जगह बंधने और हारने के लिए तैयार रहते हैं। वे इसके दोषी हो सकते हैं। हाल ही में जब मैं पश्चिम अफ्रीका के एक स्कूल में पॉल को पढ़ा रहा था, तो एक छात्र ने मुझसे कहा; उसने कहा, मुझे नहीं लगता कि इस हिस्से के लिए हमें बहुत स्पष्टीकरण की आवश्यकता है क्योंकि यह हमारे संदर्भ में बहुत वास्तविक है।

लेकिन हममें से जो लोग पश्चिमी देशों में हैं, उनके लिए यह चुनौतीपूर्ण हो जाता है। क्या होगा यदि आप जानते हैं कि आपका अविश्वासी मित्र या रिश्तेदार वास्तव में दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियों के नियंत्रण या हुक्म के अधीन है? क्या आप इसे खारिज करने का कोई कारण खोज लेंगे, भले ही आपको लगता हो कि उस व्यक्ति को उद्धार की आवश्यकता है? इस बारे में सोचें। जब हम हवा की शक्ति के शासक के बारे में बात करते हैं, तो पौलुस इफिसियों 2:1-3 में उनके बारे में यही कहता है।

उनका ब्रह्मांडीय और मानवीय क्षेत्रों में प्रभाव है। वे स्वर्गीय क्षेत्रों में हैं, और फिर भी वे मनुष्यों के जीवन जीने के तरीके को प्रभावित करते हैं। वे आध्यात्मिक संस्थाएँ हैं, फिर भी उनके पास मनुष्यों के जीवन पर शक्ति और नियंत्रण है।

पौलुस आयत 2 और 3 में बताता है कि ये आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं जो अभी काम कर रही हैं। वे वर्तमान में अविश्वासियों के जीवन में सक्रिय हैं। दूसरे शब्दों में, पौलुस के अनुसार, ऐसा कभी नहीं हुआ जब ये दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियाँ अस्तित्व में नहीं रहीं या अविश्वासियों के जीवन को नियंत्रित करना बंद नहीं किया।

तो, पॉल में, वास्तव में, एक व्यक्ति का जीवन दो आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा नियंत्रित होता है, और कोई मध्य मार्ग नहीं है। ईसाई के लिए, ईसाई का जीवन ईश्वर की आत्मा द्वारा नियंत्रित होता है, और अविश्वासी का जीवन दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा नियंत्रित होता है। जब भी मोक्ष पर चर्चा होती है, तो मुझे यह दिलचस्प लगता है, और मैं संयुक्त राज्य अमेरिका में हूँ, और मैं इसे अपने दोस्तों के साथ साझा करता हूँ।

यदि हम जानते कि शैतान लोगों के जीवन में हेराफेरी कर रहा है और हम पॉल से सहमत होते, तो हमें उन्हें उस स्थिति से बाहर निकालने में किस तरह की एजेंसी की आवश्यकता होती? क्या हम यह जानते हुए भी समझौता करेंगे कि हमारे प्रियजनों का जीवन गलत हाथों में है? हवा की शक्ति के पुजारी ऐसी शक्तियाँ हैं जो व्यायाम करती हैं, और वे अपनी शक्तियों का प्रयोग अवज्ञा के अर्थ में करती हैं। और पॉल, जब उसने अवज्ञा के अर्थ को कहा, तो ये वे लोग हैं जिनके जीवन

की विशेषता अवज्ञा है। मुझे यह पसंद है जब टिलमैन दुनिया के शासक के काम करने के तरीके की प्रकृति को समझाता है और आगे यह बताता है कि यह दुष्ट आध्यात्मिक दुनिया की इन गतिविधियों से कैसे जुड़ा हुआ है।

इस दुनिया की आयु अस्तित्व का एक शक्तिशाली तरीका है जिसकी विशेषता ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह है। यही कारण है कि दुनिया ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रही है। और मैं इसे इस तरह से कहूँगा: यह केवल आयु और आत्मा ही नहीं है, बल्कि यह शरीर भी है।

शरीर बुराई करने की आंतरिक प्रवृत्ति और झुकाव है। यह आदम के पतन के निहितार्थों से संक्रमित हमारी सृष्टि है जो हमें परमेश्वर द्वारा हमसे अपेक्षित कार्य के विपरीत कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। इसलिए यह इस बात पर है कि आप कहते हैं कि जो आत्मा काम कर रही है वह एक व्यक्तिगत और शुद्ध दुष्ट आत्मा है।

लेकिन जब यह कहा जाता है कि आत्मा, हवा की शक्ति का शासक, अवज्ञा के अर्थ में काम कर रहा है; जब यह कहने के लिए योग्य है कि यह एक आत्मा है, तो विद्वान इस बात पर बहस करने में बहुत समय बिताते हैं कि आत्मा का क्या अर्थ है। क्या इसका अर्थ मानवीय आत्मा है? क्या इसका अर्थ रवैया है या क्या? चाहे आप मानवीय आत्मा का उपयोग करें, जो संभव है, या आप कहते हैं कि यह एक आध्यात्मिक शक्ति है जो व्यक्ति में काम कर रही है, यह अभी भी अविश्वासी के जीवन में काम करने वाले हवा की शक्ति के राजकुमार के काम को नकार नहीं देता है। पॉल आपको मौत के घाट उतारने की कोशिश क्यों कर रहा है? आपको लगता है कि पॉल आपको मौत के घाट उतारने की कोशिश कर रहा है, है न? वह कह रहा है कि अगर कोई आस्तिक नहीं है या आस्तिक के लिए नहीं है, या उसे पीछे मुड़कर देखना चाहिए और कहना चाहिए कि उनका जीवन इस दुनिया के हुक्म के अनुसार, शरीर और उसकी इच्छाओं के अनुसार, और उन प्रधानताओं और शक्तियों के अनुसार जीया गया है जो अब तक आपको प्रभावित कर रही हैं।

वह यह इसलिए कहता है ताकि तुम समझ सको कि, वास्तव में, परमेश्वर ने तुम्हें किसी चीज़ से बचाया है। क्या तुम्हें वह तीसरा सवाल याद है जो मैंने तुमसे पूछा था? क्या तुम मानते हो कि दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियाँ काम कर रही हैं जो तुम्हारे जीवन को प्रभावित करने में सक्षम हैं? पॉल कहते हैं कि यह स्पष्ट है। मैंने अक्सर इस तरह का मामला उठाया है।

हम कैसे विश्वास कर सकते हैं कि पवित्र आत्मा है, जब हम यह नहीं मानते कि दुष्ट आत्मा है? हम कैसे विश्वास कर सकते हैं कि एक शक्तिशाली परमेश्वर है, जब हम यह नहीं मानते कि दुष्ट परमेश्वर है? दूसरे शब्दों में, हम क्यों यह विश्वास करना चाहते हैं कि केवल एक अच्छा परमेश्वर है, एक अच्छी आत्मा है जो वहाँ काम कर रही है और केवल हमारे भले के लिए काम कर रही है, इस तथ्य की उपेक्षा करते हुए कि हमारे पास भाई-बहन, भाई-बहन, दोस्त, रिश्तेदार हैं जो परमेश्वर द्वारा हमारे लिए की गई सभी अच्छाइयों से लाभ उठा सकते हैं। पॉल कहते हैं, याद रखें कि आप कहाँ से बचाए गए थे और किन परिस्थितियों से आप बचाए गए थे। और वह वास्तव में कहता है, आप जानते हैं क्या? हम क्रोध की वस्तुओं में बदल गए हैं।

अर्नोल्ड और अन्य लोग कहेंगे, पॉल के सोचने के तरीके में काम करने वाली दुष्ट आध्यात्मिक शक्तियों की शक्ति को कम मत समझो। पॉल के लिए, हवा के क्षेत्र का शासक, शैतान, एक बुद्धिमान और शक्तिशाली आत्मिक प्राणी है जो पूरी तरह से दुष्ट है और व्यक्तियों और समाज के सच्चे व्यक्तियों के जीवन में जितना संभव हो सके उतनी बुराई करने का इरादा रखता है। लेकिन यहीं पर अच्छी खबर आती है।

जब पॉल यह बताता है, तो आपको याद होगा कि मैंने आपको बताया था कि पद 1 से पद 7 तक एक वाक्य है। इसलिए, ईसाई धर्म से पहले के जीवन के ये सभी दुखद हिस्से सिर्फ वाक्य का आधा हिस्सा हैं। पॉल इसे तब तक समाप्त नहीं करना चाहता जब तक कि आप बिस्तर पर न जाएं और यह न सोचें कि शैतान आपके सपनों में आपके पीछे आ रहा है।

श्लोक 4, लेकिन ग्रीक में, हम इसे विपरीत संयोजन कहते हैं। यह जो कुछ हो रहा है, उसके साथ एक तीव्र विरोधाभास दर्शाता है। जब आप इस भयानक स्थिति में थे, तो मैं आपको कुछ ऐसा बताना चाहता हूँ जो हस्तक्षेप करने के लिए मौलिक रूप से हुआ है।

पद 3 के अंत में, पौलुस ने वास्तव में कहा कि इन परिस्थितियों ने हमें स्वभाव से परमेश्वर के क्रोध की वस्तु बना दिया है। परन्तु पद 4 में, परन्तु परमेश्वर जो दया में धनी है, उस बड़े प्रेम के कारण जो उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे, तो अनुग्रह से हमें मसीह के साथ जिलाया, और अनुग्रह से तुम उद्धार पाए हो। और उसने हमें मसीह यीशु में अपने साथ जिलाया और स्वर्गीय स्थानों में अपने साथ बैठाया, कि आनेवाले युगों में वह मसीह यीशु में हम पर अपने अनुग्रह और दया का असीम धन दिखाए।

यहीं पर पॉल ने पादपीठ रखी है। वाह, यह हमारा भयानक अतीत है, लेकिन दया में मत डूबो, डर में मत डूबो, सभी प्रकार के भय में मत फंसो क्योंकि कुछ हुआ है। लेकिन परमेश्वर, जो दया में समृद्ध है, ने कार्य करने का फैसला किया, हस्तक्षेप करने का फैसला किया।

यह मुझे रोमियों 5.8 की याद दिलाता है। परमेश्वर हमारे प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करता है। मुझे यह पसंद है। इसमें, जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिए मरा।

वाह, एक क्रांतिकारी परिवर्तन। आइए क्रांतिकारी परिवर्तन पर अधिक बारीकी से नज़र डालें। यहाँ क्रांतिकारी परिवर्तन, मैं इसे तीन तरीकों से समझाऊँगा, आपको इसे प्रभावी बनाने में परमेश्वर के चरित्र को दिखाऊँगा, उस परिवर्तन को लाने के लिए परमेश्वर के कार्य को दिखाऊँगा, और इस प्रक्रिया में परमेश्वर के उद्देश्य को दिखाऊँगा।

यह आमूलचूल परिवर्तन हुआ - ईश्वर का कार्य। ईश्वर के चरित्र के कारण, क्षमा करें।

भगवान एक अमीर भगवान है। आप जानते हैं, जब मैं चर्च में होता हूँ, तो मैं इस तरह की चीज़ों के बारे में बात करते समय चर्च को स्थापित करना पसंद करता हूँ, खासकर अगर यह गैर-सांप्रदायिक करिश्माई चर्च है। मुझे यह कहना पसंद है कि भगवान एक अमीर भगवान है।

और मैं आमीन समझता हूँ। क्योंकि कभी-कभी उन्हें लगता है कि मैं समृद्धि के बारे में बात करने जा रहा हूँ। हालाँकि, यहाँ मुद्दा यह नहीं है।

लेकिन परमेश्वर, जो अपने चरित्र में एक धनी परमेश्वर है, दया में भी धनी है। उसके पास है; मैं नहीं जानता कि इसे अंग्रेजी में कैसे समझाऊँ; उसकी दया का भण्डार इतना महान और शक्तिशाली है। वह दया में इतना धनी है कि आपके पाप की मात्रा, इस संसार की उम्र के जाल, शरीर की इच्छाएँ जिसने आपको इतना नियंत्रित कर रखा है, और हवा की शक्तियों के सभी शासक, और आपके जीवन, आपकी गरिमा और आपके आध्यात्मिक जीवन पर होने वाले सभी आक्रमण, परमेश्वर की समृद्ध दया में, ठीक उसी समय जब आप स्वभाव से उसके क्रोध की वस्तु थे, उसने पलटकर कहा, मेरे पास तुम पर दया करने के लिए पर्याप्त दया है।

एक धनी परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया। वह दया में समृद्ध है। अपने महान प्रेम के कारण, जो उसने हमसे प्रेम किया, वह अपने चरित्र में प्रेम में समृद्ध है।

यहाँ, पौलुस परमेश्वर के चरित्र को दर्शाता है, जिस पर इफिसियों के बारे में सोचते समय विचार करना महत्वपूर्ण है। क्योंकि जब हम उद्धार के बारे में सोचते हैं, तो कभी-कभी हमें यह अवधारणा मिलती है कि जब हम पाप के बारे में बात करते हैं, तो परमेश्वर हमेशा लोगों को दंडित करने के अवसरों की तलाश में रहता है। वह परमेश्वर नहीं है।

परमेश्वर आप और मेरे जैसे पापियों को बचाने के लिए एक अवसर की तलाश में है। अपने चरित्र में, वह दयालु है। अपने चरित्र में, वह प्रेमपूर्ण है।

यह प्रेम ही है जो उसे आप तक पहुँचने के लिए प्रेरित करेगा। और कल्पना करें कि आप गहरे पानी में डूब गए हैं या डूब रहे हैं, और कोई आपकी जान बचाने के लिए आता है। क्या आपकी प्रतिक्रिया यह है कि, मुझे अकेला छोड़ दो और मुझे मरने दो? किसने आपको बताया कि मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है? या आपकी प्रतिक्रिया कृतज्ञता और यह कहने की है कि, कृपया मेरा हाथ थाम लें? अपनी दया और प्रेम में, पॉल हमें बताएगा कि वह हमसे अपेक्षा करता है कि हम उस पर विश्वास करें और स्वीकार करें जो उसके पास हमारे लिए है ताकि वह हमें उन सभी परिस्थितियों से बाहर निकाल सके।

जो लोग इफिसियों को लिखे पॉल के पत्र को पढ़ रहे हैं, उनके लिए उन्होंने कहा, आपका अतीत ऐसा ही था, लेकिन मैं आपकी आंखें खोलकर बताता हूँ कि परमेश्वर ने क्या किया। हमारे प्रति अपनी दया और महान प्रेम में, उसने हमें बचाया। लेकिन इसे इस तरह से कहते हैं: परमेश्वर की दया उसकी अतिशय सक्रिय करुणा है और इसे स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जाता है, जो इसके उद्देश्यों की ओर से योग्यता के सभी विचारों को बाहर करता है।

हम परमेश्वर की दया पाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते। यह उसकी असीम दया और उसके महान प्रेम के कारण है कि उसने हमसे प्रेम किया। और आइए परमेश्वर के कार्य को देखें।

यह परमेश्वर, जो अपने स्वभाव में दया और प्रेम रखता है, ने भी कार्य किया। पौलुस कहता है, उसने हमसे प्रेम किया। इसी से उसने हमसे प्रेम किया।

उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया। शुरुआत में दिए गए रूपक को याद करें? हम जो मर चुके थे, उसने हमें उस मृत्यु की अवस्था में नहीं छोड़ा। उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया।

उसने हमें अपने साथ उठाया। और उसने हमें अपने साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाया। मैं आपको बताता हूँ कि यह अध्याय 1 से कैसे तुलना करता है, कि पौलुस यह सब कैसे संभाल रहा था।

अध्याय 1 में, आप अध्याय 1 पद 20 को देखते हैं, वह मसीह को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है जो मरा हुआ था। अध्याय 2, पद 1, मसीह-पूर्व अतीत में, विश्वासी अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे। अध्याय 1, पद 20, परमेश्वर ने मसीह को मृतकों में से जिलाया।

अध्याय 2, पद 6, परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ जिलाया। 1 20, उसने मसीह को अपने दाहिने हाथ बैठाया। 2 पद 6, उसने हमें मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाया।

मसीह मर गया। हम अपराधों और पापों में मरे हुए थे। वाह।

यह सब करने के पीछे परमेश्वर का क्या उद्देश्य था? क्या वह हमें बचाने आया था ताकि वह हमें पकड़कर गुलामों की तरह इस्तेमाल कर सके? या क्या? नहीं। नहीं। नहीं।

उसका उद्देश्य मानवजाति के प्रति अपने अनुग्रह के धन को प्रकट करना था। वाह! वह अपने अनुग्रह के धन को स्पष्ट करना चाहता था।

और उसने हम पर दया करके ऐसा किया। यह सब मसीह यीशु में है। न केवल इस युग में, बल्कि आने वाले युग में भी।

इस ढांचे को स्थापित करते हुए, हमारे अतीत को दिखाते हुए, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर ने क्या किया है, और कैसे अपनी दया और महान प्रेम में, उसने हमें बचाया है। पौलुस आगे कहता है, पद 8 से, "क्योंकि अनुग्रह से, हम विश्वास के द्वारा बचाए गए हैं। और यह तुम्हारा अपना काम नहीं है।"

यह परमेश्वर का दान है, न कि कर्मों का फल, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया।

वाह। अनुग्रह से, आप बचाए गए हैं। इससे पहले कि हम इस अंश को और करीब से देखें, मैं आपके दिमाग को ताज़ा कर दूँ कि अनुग्रह शब्द को कैसे समझा जा सकता है।

पुराने नियम के संदर्भ में, जब यह शब्द सेप्टुआजेंट में इस्तेमाल किया जाता है, तो इसका इस्तेमाल परमेश्वर के अपने लोगों के प्रति दयालु दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। और कभी-कभी, यह उस अनुग्रह को संदर्भित करता है जो किसी अन्य व्यक्ति की नज़र में

पाया जाता है। लेकिन उस व्यापक नज़रिए को देखने के लिए, पुराने नियम के यहूदी संदर्भ को नए नियम के संदर्भ में लाएँ।

इसके लिए खेद है। शास्त्रीय ग्रीक में, यह आकर्षक गुण है जो अनुग्रह, कृपा जीतता है। कभी-कभी, इस शब्द का उपयोग परोपकार के लिए किया जाता है, जो निम्न को अनुग्रह दिखाता है।

इसलिए, जब आप किसी ऐसे व्यक्ति को पाते हैं जो ज़रूरतमंद है या जो आपसे कमतर है और आप उनकी मदद करते हैं, तो इसे अनुग्रह दिखाने के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह दिए गए उपकार के लिए कृतज्ञता की प्रतिक्रिया है। इफिसियों में पौलुस के लिए, यह जानना महत्वपूर्ण है कि पौलुस ने कभी-कभी कानून की कानूनी अपेक्षाओं के विपरीत अनुग्रह शब्द का इस्तेमाल किया।

और पॉल के लिए, अनुग्रह में वह अनुग्रह निहित है जो किसी भी व्यक्ति ने योग्यता के लिए नहीं किया होगा। वास्तव में, लिंकन इसे इस तरह से कहते हैं: अनुग्रह की वास्तविकता और उदारता की सराहना एक ऐसे कथन के बाद और भी अधिक होती है जो दर्शाता है कि ईश्वर ने मानवीय पाप को कितनी गंभीरता से लिया है। अनुग्रह के हस्तक्षेप की आवश्यकता तब रेखांकित होती है जब इसे मानवता के दिवालियापन और विनाश के विपरीत रखा जाता है, जो अपने आप पर छोड़ दिया जाता है, जो प्रकृति द्वारा है।

अनुग्रह से, आप बचाए गए हैं, जो पाठकों का ध्यान उन्हें बचाने के दायित्व से परमेश्वर की संप्रभु स्वतंत्रता की ओर आकर्षित करता है। यह कामों से नहीं, बल्कि अनुग्रह से है। यह कामों से नहीं है; यह कुछ ऐसा नहीं है जो कानून के कामों द्वारा योग्य है, लेकिन यहाँ कामों में मानवीय प्रयास का भाव है।

यह आपके किसी मानवीय प्रयास का परिणाम नहीं है कि आप घमंड करने के लिए कारण खोजें। कोई भी व्यक्ति कभी भी परमेश्वर के अनुग्रह के योग्य होने के लिए कुछ नहीं कर सकता। इसलिए जब पौलुस वास्तव में 8 से 10 में आयत 1 से 10 तक अपने बिंदु को सारांशित करने के लिए यहाँ स्थापित करता है, तो वह वास्तव में कह रहा है कि उद्धार विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से होता है।

आपको याद होगा, इस व्याख्यान के दौरान, मैंने पहले विश्वास को समझाने के लिए समय लिया था। इसलिए, याद रखें कि यहाँ विश्वास कुछ ऐसा नहीं है जिसे आप केवल बौद्धिक रूप से मानते हैं, बल्कि यह विश्वास करना और भरोसा करना है। उद्धार ईश्वर का उपहार है, इफिसियों 2 पद 8। उद्धार कार्यो या मानवीय प्रयासों से नहीं होता है।

उद्धार अच्छे कामों के लिए एक नई सृष्टि है। परमेश्वर ने हमें अच्छे कामों के लिए तैयार करने के लिए बचाया है। यह कामों से नहीं, बल्कि अच्छे कामों के लिए है।

मुझे यह उद्धारण पढ़ने दीजिए। परमेश्वर की रचनात्मक गतिविधि का उद्देश्य केवल लोगों को बनाना नहीं है, जैसे कि वह कोई कलाकृति बना रहा हो। बल्कि, यह नई रचना सृष्टिकर्ता की तरह सक्रिय और उत्पादक होनी चाहिए।

ईसाइयों को अच्छे काम करने चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से तैयार किए हैं। हमें पहले से ही करने हैं। उद्धार कामों से नहीं है।

यह निश्चित रूप से काम के लिए है। यानी, जीवन का मतलब है आज्ञाकारी और उत्पादक तरीके से जीना। और अद्भुत अनुग्रह पर इस चर्चा को समाप्त करने की कोशिश में, मुझे एक महत्वपूर्ण घटना पर आपके दिमाग को ताज़ा करने के लिए एक संक्षिप्त क्षण लेने दें।

युवा ब्रिटिश लड़का, जॉन न्यूटन, इंग्लैंड में पैदा हुआ और पला-बढ़ा; उसने छह साल की उम्र में अपनी माँ को खो दिया। जॉन ने खुद को सभी तरह की नापाक गतिविधियों में शामिल कर लिया। हमें बताया जाता है कि उसने एक गुलाम जहाज पर काम किया और शायद कुछ गुलामों का यौन शोषण किया।

जॉन ने बाद में अपने प्राण त्याग दिए जब वह थॉमस ए केम्पिस की पुस्तक इमिटेटियो क्रिस्टी पढ़ रहे थे, जिसका लैटिन में अनुवाद है, मसीह की नकल। 39 वर्ष की आयु में, जॉन न्यूटन एक पादरी बन गए और अन्य पैरिशों के अलावा, सेंट पीटर और पॉल के अल्ने पैरिश चर्च में सेवा की, जो ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के बीच एक छोटा सा शहर है। आज, अल्ने में एक कब्रिस्तान के बगल में खड़े 14वीं सदी के चर्च की दीवार पर यह शिलालेख है।

जॉन न्यूटन क्लार्क, जो कभी एक नास्तिक और उच्छृंखल व्यक्ति था, अफ्रीका में गुलामों का सेवक था, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की असीम दया से उसे बचाया गया, बहाल किया गया, क्षमा किया गया, और उस विश्वास का प्रचार करने के लिए नियुक्त किया गया जिसे नष्ट करने के लिए उसने लंबे समय तक मेहनत की थी। जॉन न्यूटन, जो मानते थे कि वह उन सभी दंडों के हकदार हैं जो ईश्वर लोगों को दे सकते हैं, जो मानते थे कि उनके पाप बहुत भारी थे, दक्षता के इस परीक्षण से प्रेरित होकर, ईश्वर की कृपा को समझा, कई भजन लिखे, जिनमें से एक प्रसिद्ध भजन है जिसे आप अच्छी तरह से जानते हैं, वह है अमेजिंग ग्रेस, जिसमें न्यूटन लिखते हैं, अमेजिंग ग्रेस, कितनी मधुर ध्वनि, जिसने मुझ जैसे दुखी को बचाया। मैं एक बार खो गया था, लेकिन अब मैं मिल गया हूँ।

मैं अंधा था, लेकिन अब मैं देख सकता हूँ। यह अनुग्रह था, अनुग्रह जिसने मेरे दिल को डरना सिखाया, और अनुग्रह ने मेरे डर को दूर किया। वह अनुग्रह कितना कीमती था, जिस समय मैंने पहली बार विश्वास किया।

फिर, वह परमेश्वर के वादे के बारे में बात करता है। प्रभु ने मेरे लिए भलाई का वादा किया है। उसका वचन, मेरी आशा, सुरक्षित करता है।

जब तक जीवन बना रहेगा, वह मेरी ढाल और मेरा भाग रहेगा। इफिसियों अध्याय 2, आयत 1 से 10 में, मैं इसे अनुग्रह द्वारा उद्धार कहता हूँ क्योंकि वहाँ आपको अनुग्रह द्वारा उद्धार के बारे में एक अच्छी तस्वीर मिलती है। आयत 1 से 3 हमें मसीह-पूर्व अतीत की याद दिलाती है।

श्लोक 4 से 7 में ईश्वरीय हस्तक्षेप का वर्णन किया गया है। यह सब एक ही वाक्य में है। तो हम जो चाहते थे और ईश्वर ने जो किया, उसके बीच एकदम विपरीतता है।

उसने हमारे प्रति दया और महान प्रेम में केवल अपने धन से कार्य किया। और फिर भी हम मूर्ख बनने के लिए अनुग्रह से नहीं बचाए गए हैं। हम अनुग्रह से एक ऐसा जीवन जीने के लिए बचाए गए हैं जो अच्छे कार्यों के रूप में चित्रित किया गया है जिसे परमेश्वर ने पहले से तैयार किया है ताकि हम उनमें रह सकें।

तैयार का अनुवाद किया गया यूनानी शब्द कारीगर की कल्पना है। उसने पहले से ही निर्माण और ढाला ताकि हम उनमें रह सकें। मुझे उम्मीद है कि यह समझने से कि परमेश्वर ने आपको कहाँ से लिया है, आप पौलुस द्वारा विश्वासियों से कही गई बातों की सराहना करेंगे।

लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप एक बात भूल जाएँ जिस पर हम अपने अगले व्याख्यान में चर्चा करेंगे। पॉल चर्च को यह याद दिलाने के लिए मंच तैयार कर रहे हैं कि हमने अपने उद्धार को समाप्त करने के लिए कुछ भी नहीं किया है, और इसका असर इस बात पर होना चाहिए कि हम विश्वास के समुदाय में एक-दूसरे के साथ कैसे संबंध रखते हैं। हमने चर्च में अंतर-जातीय राजनीति के लायक कुछ भी नहीं किया है।

हमने दूसरों पर श्रेष्ठता का दावा करने के लिए कुछ नहीं किया है। हम सभी ने पाप, दुष्ट शक्तियों के अधीनता और अपने शरीर पर नियंत्रण साझा किया है, और भगवान ने हस्तक्षेप किया। मुझे उम्मीद है कि अध्याय 2 की यह खिड़की आपको अध्याय 2, श्लोक 11 से 22 तक की चर्चा के बाकी हिस्सों का अनुसरण करने के लिए तैयार करेगी।

अनुग्रह से हम बच गए हैं। यह काम से नहीं है। यह ईश्वर का उपहार है।

हम घमंड नहीं कर सकते। हमें केवल कृतज्ञता के साथ इसका स्वागत करना चाहिए और ईश्वर ने हमारे लिए जो कुछ किया है, उसके लिए कृतज्ञतापूर्वक जीवन जीना चाहिए। हमारे साथ इन व्याख्यानों का अनुसरण करने के लिए धन्यवाद, और मुझे आशा है कि आप हमारे साथ सीखना जारी रखेंगे।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में बोल रहे हैं। यह सत्र 22 है, अनुग्रह द्वारा मुक्ति, इफिसियों 2:1-10।